डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष, अष्टम पत्र

काव्य में फैंटेसी

फैंटेसी का शाब्दिक अर्थ है – विलक्षण कल्पना। मनोविज्ञान की भाषा में जिसे मतिविभ्रम (Hallucination) कहते हैं, वह फैंटेसी से मिलता – जुलता है। जैसे – भूत वास्तव में नहीं होता है, किन्तु मतिविभ्रम के कारण भूत को देखना, उसका चलना – फिरना, उठना – बैठना आदि क्रियाकलाप हैल्यूसिनेशन कहलाता है। विशिष्ट इच्छा एवं प्रयोजनपूर्वक कवि या साहित्यकार जो मायामहल गढ़ता है उसे फैंटेसी कहा जाता है। फैंटेसी सर्जनात्मक कल्पना द्वारा रचित ऐसी संरचना होती है जो वास्तविक अस्तित्व रखती ही नहीं है। इस प्रकार फैंटेसी यथार्थ के समानांतर एक दूसरी दुनिया रचती है जो अयथार्थ होकर भी यथार्थ सी प्रतीत होती है। फैंटेसी पूर्णतः काल्पनिक होती है परंतु यथार्थ से इसका संबंध होता है। कॉडवेल ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'इल्यूजन एण्ड रियलिटी' में फैंटेसी के संबंध में कहा है –

"कविता कवि की मूल प्रवृत्तियों तथा अनुभूतियों के अन्तस्संघर्ष से उत्पन्न होती है। यह तनाव ही कवि को फैंटेसी के मायाजाल की ओर प्रवृत करता है जिसका वस्तु – जगत से क्रियात्मक संबंध होता है तथा जो वस्तु – जगत का ही उत्पाद है।"

कवि की मूल प्रवृत्तियाँ उसके यथार्थ अनुभव से टकराती हैं, फिर इस टकराहट के परिणामस्वरूप वह कल्पनालोक की सृष्टि करता है। इसी कल्पनालोक से फैंटेसी की उत्पत्ति होती है। फैंटेसी काल्पनिक होती है पर वह यथार्थ को भलीभांति अभिव्यक्ति देती है।

ई. एम.फॉर्स्टर के मतानुसार फैंटेसी के उपयोग से सामान्य कथ्य में एक विशिष्ट प्रकार का प्रभाव उत्पन्न हो जाता है जो बहुतों को उत्तेजित करता है तो कुछ को निराश भी कर सकता है। बहुत से पाठक फैंटेसी की अतार्किक एवं अविश्वसनीय संरचना को आत्मसात करने के लिए तैयार नहीं होते, क्योंकि इसमें अतिमानवीय एवं अलौकिक तत्वों का योग अवश्यम्भावी है।

फॉर्स्टर फैंटेसी के साथ मिथकीय धरातल का संयोग भी अनिवार्य मानते हैं। किंतु फैंटेसी में निहित मिथकीय धरातल सदैव यथार्थ के साथ संयुक्त होता है। मिथकीय तत्व यहां पहुँचकर वाग्विदग्धता एवं आकर्षण से दीप्त हो जाते हैं।

श्रीमती लैंगर भी अपनी पुस्तक 'फीलिंग एंड फॉर्म' में फैंटेसी को मिथक की तुलना में अधिक महत्व प्रदान करती हैं। उनका कथन है –

“अन्तरकथाएँ, मिथक और परीकथाएं आदि अपनेआप में साहित्य नहीं हैं और कला तो बिल्कुल नहीं हैं किंतु फैंटेसी कला का सहज साधन है।”

लैंगर का यह कथन पूर्णतः सत्य है क्योंकि मिथ या दूसरे तत्व पूर्ण नहीं होते अपितु कथ्य के साधनमात्र होते हैं जबकि फैंटेसी में यथार्थ, कल्पना, बिम्ब, प्रतीक तथा मिथ आदि तत्वों के योग के कारण एक पूर्णता होती है।

आधुनिक युग में फैंटेसी की रचना कवियों की एक सामान्य प्रवृति रही है। अनेकानेक समर्थ कवियों ने स्वप्न की तरह सहज कल्पना के अधीन फैंटेसी की रचना की है।

मुक्तिबोध की अनेक लम्बी कविताओं में फैंटेसी का प्रयोग दिखलाई पड़ता है। मुक्तिबोध कल्पना करते हैं कि बियाबान जंगल के पुराने खंडहर के ऊपर चांदनी खिली हुई है और खंडहर के इर्द – गिर्द पुराने बरगद पर रहनेवाले ब्रम्हराक्षस, उल्लू, सियार, घुग्घू आदि इसकी सुनहरी किरणों से दीप्त हो रहे हैं।